पाकिस्तान से परे दुनिया

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

25 सितम्बर, 2018

इंडियन एक्सप्रेस

लेखक-
सी. राजा मोहन
(निर्देशक, दक्षिण एशियाई अध्ययन संस्थान, सिंगापुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय)

''संयुक्त राष्ट्र में, भारत को अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में सामने आने वाले संरचनात्मक परिवर्तनों के साथ संलग्न होना चाहिए।''

अभी हाल ही में भारत सरकार ने पाकिस्तान के विदेश मंत्री के साथ सुषमा स्वराज की न्यूयॉर्क में प्रस्तावित मुलाकात रद्द कर दी, जिसके बाद इस्लामाबाद के साथ दिल्ली का खराब रिश्ता संयुक्त राष्ट्र में भारत के अन्य कार्यक्रमों की कीमत पर उपमहाद्वीप में सुर्खियों को आकर्षित करना जारी रखेगा।

यदि अतीत कोई मार्गदर्शक है, तो दोनों देशों के विदेश मंत्री, भारत से सुषमा स्वराज और पाकिस्तान से शाह मोहम्मद कुरैशी आतंकवाद और कश्मीर से संबंधित मुद्दों पर फिर से चर्चा करेंगे। कुछ अन्य प्रतिनिधिमंडलों को इस प्रदर्शन में दिलचस्पी होगी।

अपवाद भारत और पाकिस्तान के मीडिया प्रतिनिधियों द्वारा प्रदान किया जाता है। यह कहानी निम्नलिखित प्रश्नों पर ध्यान केंद्रित करती है कि क्या भारतीय विदेश मंत्री दक्षिण एशियाई विदेश मंत्रियों की परंपरागत बैठक में भाग लेंगी या यदि वह ऐसा करती हैं, तो क्या वह कुरैशी के साथ हाथ मिलायेंगी? क्या वे कुछ पलों के लिए बातचीत करेंगे?

दो दशकों से अधिक समय से, एकमात्र प्रश्न जो बहुपक्षीय सभाओं में भारतीय जनता की रूची को गैर- गठबंधन शिखर सम्मेलन से आसियान क्षेत्रीय मंच और यूएनजीए, सार्क सभाओं तक जीवत रखे हुए है वह हैं, भारत और पाकिस्तान के बीच एक राजनयिक वार्तालाप की संभावना। देखा जाये तो शब्दों के इस युद्ध की एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना दोनों देशों के बड़े वैश्विक मुद्दों से जुड़ने की गहरी अक्षमता रही है।

एक ऐसा समय भी था जब पाकिस्तान और भारत दोनों की आवाजों को विश्व स्तर पर अहमियत दी जाती थी।

पाकिस्तान एशिया में पश्चिमी गठबंधन प्रणाली का एक प्रमुख सदस्य था। इस्लामाबाद ने खुद को एक व्यावहारिक इस्लामी राष्ट्र के रूप में देखा है जो मध्य पूर्व में अपने प्रभाव का उपयोग करने और अमेरिका और चीन के बीच एक पुल के रूप में कार्य करने में सक्षम था।

भारत की स्थिति और भी दु:खद है। संयुक्त राष्ट्र में भारत की राजनीतिक आवाज बुलंद थी, जब इसका आर्थिक भार सीमित था। आज, इसके बढ़ते आर्थिक माहौल और वैश्विक पदचिह्न का विस्तार करने के बावजूद, भारत अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में सामने आने वाले संरचनात्मक बदलावों के बजाय कुछ मुद्दों के साथ भ्रमित प्रतीत होता है।

दिल्ली ने आतंकवाद के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की खोज में अपनी बहुत अधिक ऊर्जा खर्च भी की है जो भारत की सुरक्षा चुनौतियों को दूर करने में सहायक साबित नहीं हो सका। आखिरकार, संयुक्त राष्ट्र प्रस्तावों को राष्ट्रों द्वारा अनुष्ठान की तुलना में उल्लंघन में अधिक सम्मानित किया जाता है।

भारत को महत्त्वपूर्ण लाभ केवल साझेदारी से मिली, उदाहरण के लिए अमेरिका और अरब खाड़ी भागीदारों के साथ साझेदारी।

एक दूसरा महत्वपूर्ण विषय वैश्विक व्यापार है। जबकि संयुक्त राष्ट्र में भारत का राजनीति तथाकथित 'वैश्विक दक्षिण' की पुरानी सत्यताओं में डूब गया है, ट्रम्प विश्व व्यापार संगठन से बाहर निकलने और संप्रभुता के नाम पर फिर से विवाद निपटारे तंत्र को चुनौती देने की धमकी दे रहा है।

प्रमुख व्यापारिक राष्ट्र पहले से ही सुधार के प्रस्तावों का जवाब देना शुरू कर रहे हैं। यदि यह नहीं बदलता है, तो डब्ल्यूटीओ ट्रम्प युग में नहीं टिक सकता है।

भारत के लिए क्या मायने रखता है यह तथ्य है कि खाड़ी क्षेत्र के भू-राजनीति - जहां भारत में भारी आर्थिक और राजनीतिक हिस्सेदारी है - अभूतपूर्व परिवर्तन से गुजर रहा है। तो विश्व व्यापार प्रणाली और बहुपक्षवाद की प्रकृति है।

इस वर्ष संयुक्त राष्ट्र में भारत का राजनयिक जुड़ाव इन चुनौतियों का समाधान निकालने के लिए एक नई रणनीति तैयार करने के संदर्भ में होना चाहिए।

* * *

भारत-पाकिस्तान संबंध

चर्चा में क्यों?

- हाल ही में भारतीय विदेश मंत्री सुषमा स्वराज और पाकिस्तानी विदेश मंत्री महमूद कुरैशी की संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएमजीए) सत्र के इतर प्रस्तावित बैठक को नई दिल्ली ने रद्द कर दिया है।
- पाकिस्तान पर जम्मू एवं कश्मीर में सुरक्षाकर्मियों की हत्या और आतंकवाद का महिमामंडन करने का आरोप लगाते हुए भारत ने पाकिस्तानी विदेश मंत्री के साथ भारतीय विदेश मंत्री की प्रस्तावित वार्ता शुक्रवार को रद्द कर दी।

देशों के बीच विवाद के प्रमुख निम्नलिखित मुद्दे

- **कश्मीर मुद्दा :** भारत के विभाजन के बाद कश्मीर देशी रियासत का भारत में विलय हो गया, परंतु पाकिस्तान के द्वारा इसे स्वीकार नहीं किया गया तथा सामरिक और सैन्य दृष्टिकोण से कश्मीर के महत्त्व को देखते हुए पाकिस्तान इसे अपना भाग बनाने का प्रयास करता रहा, जबकि भारत शुरू से ही कश्मीर को अपना अभिन्न अंग मानता आया है।
- इस संदर्भ में 1994 में भारतीय संसद के द्वारा प्रस्ताव भी लाया गया जिसमें स्पष्ट उल्लिखित है कि पाक अधिकृत कश्मीर भारतीय कश्मीर का भाग है।
- **सिंधु नदी जल विवाद मुद्दा :** 1960 में सिंधु नदी समझौते के अंतर्गत सिंधु, झेलम और चिनाब को पाकिस्तान की नदियों के रूप में जबकि सतलुज, रावी एवं व्यास पर भारत के नियंत्रण को स्वीकार किया गया।
- इस समझौते के द्वारा भारत को पाकिस्तान की नदियों पर जल के सीमित प्रयोग का अधिकार दिया गया।
- **पाकिस्तान की आपत्ति :** पाकिस्तान के द्वारा यह आरोप लगाया जाता है कि भारत, पाकिस्तान के हिस्से के पानी का प्रयोग कर रहा है।
- **भारत का तर्क :** भारत के अनुसार ग्लेशियर कम होने से और बरसात कम होने के कारण सिंधु नदी में पानी का प्रवाह कम हो रहा है तथा सिंधु नदी के पानी का मुद्दा उठाकर पाकिस्तान सीमापार आतंकवाद से ध्यान भटकाना चाहता है।
- **सियाचिन विवाद :** सियाचिन, पाकिस्तान नियंत्रित गिलगित और बालटिस्तान के समान अत्यधिक ऊँचाई पर होने के साथ ही काराकोरम दर्रे के निकट है जो भारत के जम्मू व कश्मीर राज्य को तिब्बत या चीन से जोड़ता है, इसलिये यह भारत और पाकिस्तान दोनों के लिये सामरिक महत्त्व रखता है।
- पाकिस्तान द्वारा 1984 में इस पर नियंत्रण करने का प्रयत्न किया गया, जिसके जवाब में भारत के द्वारा ऑपरेशन मेघदूत प्रारंभ किया गया और उसके बाद से यह क्षेत्र भारत के कब्जे में है।
- **आतंकवाद का मुद्दा :** पाकिस्तान द्वारा कश्मीर में आतंकवाद, अलगाववादी व उग्रवादी संगठनों को बढ़ावा देने के साथ-साथ भारत के विरुद्ध छद्म युद्ध भी चलाया जा रहा है, जिसमें 2001 में भारतीय संसद पर हमला, 2008 में मुंबई हमला तथा हाल ही में पठानकोट आतंकी हमला प्रमुख हैं।
- पाकिस्तान उन आतंकी संगठनों (जैसे- लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मुहम्मद) को प्रशिक्षण व वित्तीय सहायता उपलब्ध कराता है जो कश्मीर के साथ-साथ भारत के विरुद्ध हिंसात्मक घटनाओं में शामिल होते हैं।
- **सरक्रीक विवाद :** सरक्रीक भारत के कच्छ और पाकिस्तान के सिंध प्रांत की विभाजक रेखा है जिसके निकट कराची पत्तन स्थित है। पाकिस्तान का तर्क है कि कच्छ के क्षेत्र में स्थित सरक्रीक का विभाजन 24 समानांतर होना चाहिये, जबकि भारत इस तर्क को स्वीकार करने के लिये तैयार नहीं है और भारत के अनुसार मिड चैनल के आधार पर रेखा का विभाजन होना चाहिये।
- **चीन-पाक आर्थिक गलियारा :** यह आर्थिक कॉरिडोर चीन के जिगजियांग क्षेत्र के काशगर क्षेत्र को पाकिस्तान के बलूचिस्तान राज्य में स्थित ग्वादर पत्तन से जोड़ता है।
- यह कॉरिडोर पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर से होकर गुजर रहा है और वैधानिक रूप से भारत का भाग है, जो भारतीय सुरक्षा के लिये एक बड़ी चुनौती है।

* * *

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. निम्नलिखित में से कौन-कौन से मंच भारत एवं पाकिस्तान के मध्य वार्तालाप हेतु अवसर उपलब्ध कराते हैं?

1. आसियान
2. सार्क
3. यूएनजीए

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन करें-

(a) 1 और 2 (b) 1 और 3
(c) 2 और 3 (d) उपर्युक्त सभी

2. सिन्धु जल समझौते के तहत किन-किन नदियों पर भारत का नियंत्रण है?

1. चिनाब
2. सतलुज
3. झेलम
4. रावी
5. व्यास

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन करें-

(a) 1, 4 और 5 (b) 1, 2, 4 और 5
(c) 2, 4 और 5 (d) उपर्युक्त सभी

2. निम्नलिखित में से कौन-से क्षेत्र भारतीय नियंत्रण में है?

1. सियाचिन
2. गिलगित
3. काराकोरम
4. बालटिस्तान

नीचे दिए गए कूट से सही उत्तर का चयन करें-

(a) 1, 2 और 3 (b) 1 और 2
(c) 1 और 3 (d) उपर्युक्त सभी

नोट-

24 सितम्बर को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(c), 2(d), 3(d) होगा।

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्र. "अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली में संरचनात्मक परिवर्तनों के आलोक में भारतीय विदेश नीति को पुनः परिभाषित करने की आवश्यकता है।" उपरोक्त कथन के आलोक में अपना तर्क प्रस्तुत करे। (250 शब्द)

"In the light of structural changes in International System Indian Foreign Policy needs to be redefined." Present your argument in this respect. (250 Words)